III Raymond Firth — 1901–2002

Books

1- We, the Tikopia (1936)
2- Symbols : Public and Private (1973)
3- Primitive Polynesian Economy (1939)
4. Elements of Soial Organization (1947)
5- Human Types (1938)
6- Tikopia Ritual and belief (1967)
7. Religion : A Humanist Interpretation (1995)
8. Essays On soial Organization and values (1964)
9- Works of the Gods in Tikopia (1940)
10- Soial change in Tikopia (1959)
11- Two studies of kinship in London (1956)
12- A study in ritual modification (1963)

Scanned with CamScanner

William Raymond Firth

died – 22 feb 2002 (101 years old)

Unit - III

रेमण्ड फर्थ

(Remond Firth)

1. **सामाजिक संरचना तथा सामाजिक संगठन (Social Structure & Social Organisation):**

Remond Firth Radcliffe Brown के छात्र थे तथा एक ब्रिटिश मानवशास्त्री थे उन्होने लीच के समान ऐतिहासिक एवं गतिशील प्रकार्यवाद का समर्थन किया है। उन्होंने अफ्रीका में टिकोपिया जनजाति का अध्ययन किया। इस अध्ययन पर उन्होंने अपनी पुस्तक We- The Tikopia (1951) में प्रकाशित की। 1950 में आपने जो फील्डवर्क किया उसे अपनी दूसरी पुस्तक Elements of Social Organisation में प्रकाशित किया। रेमण्डफर्थ ने अपने अध्ययन में सामाजिक संरचना प्रकार्य एवं सामाजिक संगठन के बीच पाये जाने वाले अन्तर को स्पष्ट किया है। फर्थ के अनुसार संरचना अगों का एक औचारिक सम्बन्ध है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार आंकड़ों के समूह संरचना प्रदर्शित करते है, क्योकि वे निश्चित क्रमिक अगों की व्यवस्था प्रदर्शित करते है फर्थ के अनुसार इस संरचना में तीन प्रकार के द्विभागीकरण पाये जाते हैं. यह द्विभागीकरण संरचना के पहलू हैं जो निम्न प्रकार है।

1. प्रकार्य के विपरीत संरचना।
2. गुणात्मक आचरण के विपरीत संरचना।
3. प्रकिया के विपरीत संरचना।

फर्थ के अनुसार जब तक इन द्विभागीकरणों का समाधान नही होगा तब तक हम संरचना की परिभाषा देने में असमर्थ रहेगा।

In 1928 he visited Tikopia, the southernmost of the Solomon Islands to study the Polynesian culture of the local people.

सामाजिक संरचना (Social Structure):

यह कई अगों का एक व्यवस्थित ढंग है यह अंग आपस में अन्तःसम्बन्धित तथा अन्तः निर्भर होते है किसी भी एक अंग में परिवर्तन दूसरे अगों में भी परिवर्तन को दर्शाता है। लेकिन यह आदर्शगत व्यवस्था है क्योकि इसके अन्दर आंशिक परिवर्तन शामिल नही है और व्यक्ति हर समय इन आदर्शो का पालन नही कर सकता है लेकिन करना चाहता है। सैद्धान्तिक रूप में संरचना में सबसे महत्वपूर्ण संबंधों को जटिल सम्बन्ध कहा जाता हैं। उदाहरण के रूप में पितृवंशीय परिवारो में पिता पुत्र और मातृवंशीय में माता–पुत्री या मामा भाजो के बीच सम्बन्ध जो स्पष्ट रूप से किसी विशेष समाज की परम्पराओं के अनुसार जुडे हुए होते है मनुष्य इन संबन्धों को बरकरार रखना चाहता है इसी कारण इन सम्बन्धो को जटिल कहा जाता है मनुष्य इन सम्बन्धों के गुणात्मक पहलुओं की उपेक्षा नही कर सकता है। यदि इन सम्बन्धों की प्रकृति में परिवर्तन उत्पन्न होता है तो सम्पूर्ण संरचना में बदलाव उत्पन्न हो जाएगा। इस कारण इनके रख रखाव के लिये मनुष्य विकल्पो का प्रयोग करता है इन्ही जटिल सम्बन्ध को फर्थ ने सामाजिक संगठन कहा है जिसमें प्रकार्य का तात्पर्य संरचना का प्रत्येक अंग अपनी–अपनी क्रियाओं के माध्यम से अपने–आपको और संरचना को चलाता रहे।

सामाजिक संगठन (Social Organisation):

यह संरचना के अन्दर की एक विचारधारा है जिसमें संरचना के सारे जटिल सम्बन्ध आते है इनको बनाए रखने के लिये व्यक्ति कुछ विकल्पो का प्रयोग करता है उदाहरण अफ्रीका की टिकोपिया जनजातियों में मामा भाजें के लिये मामा की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है जिस घर में मामा नही होते उस घर में मामा के पुत्र को

Scanned with CamScanner

मामा माना जाता है यह आदर्श तो नही है लेकिन आदर्श के विपरीत भी नही है इस प्रकार के विकल्पो का प्रयोग करते हुए व्यक्ति को दो तत्वो को ध्यान में रखना चाहिए।

उत्तरदायित्व (Responsibility):

विकल्पो का प्रयोग करते समय व्यक्ति का यह उत्तरदायित्व बनाता है कि विकल्पों के प्रयोग के द्वारा संरचना में परिवर्तन न होने दें;

प्रतिनिधित्व (Representation):

उत्तरदायित्व के प्रयोग में पूरे समुदाय की स्वीकृत प्राप्त होती है इसका अर्थ है उस विकल्प का प्रयोग पूरे समाज का प्रतिनिधित्व कर रहा है उदाहरण जैसे हिन्दू विवाह में नाऊन की भूमिका को निभाने के लिये शहरो में इसका विकल्प लाया जाता है जिसको समाज की स्वीकृति प्राप्त होती है।

उड़ीसा की कौधं जनजाति में स्त्रियाँ अपने पतियों के अत्यधिक मद्यपान के कारण परेशान रहती थी वहाँ की महिलाओं ने कुछ NGO's तथा पुलिस की सहायता से एक अभियान शुरू किया था यह अभियान सात गावों में चला जिसमें मद्यपान की सभी दुकानों को बन्द करा दिया गया और किसी व्यक्ति के मद्यपान करने पर उसपर जुर्माना लगाया गया। इस जनजाति में हर महीने एक पूजन में देवता को शराब और मांस चढ़ाया जाता था, पुरूषों द्वारा पूजा का पूरी शक्ति से विरोध किया गया तब उन लोगो ने पानी का प्रयोग किया जिससे अलौकिक शक्ति से उनका सम्बन्ध बना रहे।

इसी प्रकार भारतीय समाज में सयुक्त परिवार में संगठनात्मक परिवर्तन आया है लेकिन यह संरचनात्मक परिवर्तन नहीं है। इस पर ए0एम0 शाह ने अपने लेख Family in India- Critical Essay

में कहा है कि संयुक्त परिवार पूर्ण रूप से नाभिकीय परिवार में परिवर्तित नही हुआ है।

अंत में हम यह कह सकते है कि मनुष्य जिन नियमो विश्वासो आशाओ तथा परम्पराओ के माध्यम से अपनी-अपनी भूमिकाएं निभाते हैं, इन भूमिकाओ द्वारा समाज एक क्रम में व्यवस्थति होता है अतः सामाजिक संरचना केवल सम्बन्धो की उपस्थिति या संग्रह नही हे बल्कि सम्बन्धो की एक क्रमिक व्यवस्था है जिसमें वह प्रकट होती है।

फर्थ के अनुसार मनुष्य में निर्णयशक्ति की श्रेष्ठता के आधार पर नही बल्कि किसी निश्चित लक्ष्य के प्रति क्षमता के वैयक्तिक मूल्यांकन के आधार पर होती है ये लक्ष्य स्वयं निरउद्देश्य नही होते बल्कि उनकी सूत्रबद्धता उन समूहो या उपसमूहो द्वारा होती है ये उपसमूह अन्दर से संरचित होते है तथा एक दूसरे से सम्बन्धित होते है ताकि सम्पूर्ण समाज को संरचित किया जा सके। व्यक्ति विभिन्न प्रकार के समूहो के अर्न्तगत आते है जिसका निर्धारण विवाह, नातेदारी पेशा, अर्थव्यवस्था पद श्रेणी आदि के आधार पर किया जाता है क्योंकि इन समूहों की सदस्यता परस्परव्यापी है, अतः क्रियाओं के विकल्प में संर्घष उत्पन्न होता है। फर्थ के अनुसार इन विकल्पों तथा संर्घषो का अध्ययन एक समाज में ही नही बल्कि पर–सांस्कृतिक स्तर पर भी किया जाना चाहिए ताकि परिवर्तन के नियम की खोज की जा सके।

Books:
① The Dynamics of Clanship Among the Tallensi (1945)
② The Web of Kinship Among The Tallensi (1949)

मेयर फोर्टेस
(Mayer Fortes)

(25 Apr - 27 Jan) 1906 - 1983) III unit

सामाजिक संरचना एवं समय (Social Structure & Time)

मेयर फोर्टेस **(Mayer Fortes)** ब्रिटिश मानवशास्त्री थे इन्होने अशन्ति तथा तापलेंन्सी जनजातियों पर अपना अध्ययन किया

Ashanti Tallensi people in Ghana

Fortes Meyer (1970) Time and Social